International Journal of Advanced Academic Studies

E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
IJAAS 2019; 1(2): 40-41
Received: 23-08-2019
Accepted: 27-09-2019

प्रीति प्रिया
शोधार्थी, विश्वविद्यालय, इतिहास विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा, बिहार, भारत।

Corresponding Author:
प्रीति प्रिया
शोधार्थी, विश्वविद्यालय, इतिहास विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा, बिहार, भारत।

मिथिला के पीठों से तंत्र एवं तांत्रिक परम्परा का सम्बन्ध

प्रीति प्रिया

सारांश
भारत के साथ–साथ मिथिला में भी तंत्र और तांत्रिक परम्परा का विकास वस्तुतः कब हुआ और किस काल खण्ड से प्राप्त हुआ उस पर इतिहासकारों ने न तो बहुत अधिक शोध किये हैं और न ही इस परम्परा पर कोई ठोस अवधारणा या मत ही देखने को मिलता हैं। किन्तु इतना कहने में किसी प्रकार का विरोध कदापि नहीं होगा कि प्राचीन दुनियां में तंत्र और तांत्रिक परम्परायें न केवल आयुष विज्ञान से भी पूर्व से प्रचलित और मान्य रहा हैं बल्कि यह एक औषधीय परम्परा के रूप में नील नदी घाटी की मिश्र सभ्यता के साथ–साथ दजला फरात घाटी की तमाम सभ्यताओं, असिरिया, सुमेरिया, बेबीलोनिया के साथ–साथ विस्तृत ईरानी भू–खण्ड जिसमें कुवैत आदि देश भी शामिल था, से लेकर ख्रिस्तानी दुनिया दूसरी विश्व में भी समग्र रूप से सर्वत्र व्याप्त रहा था।

प्रस्तावना
भारत अर्थात् सैंधव सभ्यता जिसमें नियाटिक परम्परा और लोकाचरण के साथ बंगाल और बिहार का मिथिला प्रक्षेत्र सम्मिलित था, अर्थात् तब के बंगाल [1] और अब के आसाम का कामाख्या प्रक्षेत्र तंत्र परम्पराओं के लिए और तांत्रिक क्रियाओं के विकास का मूलाधार रहा है। आदि कालिन इक्यावन (51) पीठों [2] सहित कामाख्या का यह महातीर्थ तांत्रिक क्रियाओं और तंत्र साधनाओं के लिए सम्पूर्ण सिद्धियों के साथ जुड़ा हुआ था धर्माचार्यो का मानना है कि सभी चौरासी (84) योनियों सहित चौसठ (64) कला और चौसठ योगिनीयों के आसनों से यह सिद्ध पीठ रिद्धि और सिद्धि के साथ–साथ सम्पूर्ण ज्ञान और विज्ञान तथा निर्माण और पोषण एवं प्रलय के लिए उसी काल से विश्व–विख्यात रहा है।

यहाँ यह दुहराने की जरूरत नहीं है कि कामाख्या पीठ [3] के भगवती का इतिहास शिव के उसी शक्ति या महाशक्ति सती के उद्भव से हुआ था। देवी भागवत्, मत्स्य पुराण आदि सभी पुराणों एवं भारतीय तमाम शक्ति– शास्त्रों में इस पीठ की शक्ति का निरूपण और वर्णन इक्यावन (51) शक्ति–पीठ के रूप में किया गया है और भगवती की सम्पूर्ण शक्ति सम्मिलित 'भगतीर्थ' इसी को माना गया है।

यह सिद्ध पीठ अपने आप में बहुत सारी विचित्रताएँ समेटे हुए है। इक्यावन शक्ति पीठों में यहाँ की पूजा पद्धति भिन्न है। यहाँ की सर्वश्रेष्ठ पूजा ''कुमारी पूजन है।'' और इन तमाम परम्पराओं से जुड़ी पूजा पद्धति, उनके स्वरूप, उनके आचरण, उनके व्यवहार और मर्यादा पर आजतक कोई प्रश्न चिन्ह नहीं खड़ा किया गया है। हलाँकि यहाँ के तंत्र पद्धति और परम्पराओं में पंचमकार और वैदिक साधना का अनोखा सम्मिश्रण देखने को मिलता है; लेकिन इन दोनों ही पद्धतियों में बलि प्रथा का यहाँ उतना ही महत्वपूर्ण स्थान है जितना की कश्मीर के वैष्णवी देवी में उसे अस्वीकार किया गया है।

अतः उन तमाम तांत्रिक दर्शनों में, जो तत्कालीन बंगाल के कामाख्या से प्रारंभ होती हुई मिथिला के डोकहर में समाप्त हो जाती है, यह स्मरणीय है कि कामाख्या के तंत्र परम्परा के वैदिक स्वरूप का प्रारंभ कश्मीर के वैष्णवी से प्रारंभ होता है, तथा अकौर और उच्चैठ में जनक राजाओं के कुल–देवी के गर्भगृह में पूर्वी और पश्चिमी पूजा पद्धति का संगम होता है, तथा उसका सम्पूर्ण–स्वरूप बंगाल के कामाख्या तीर्थ में प्रकट हो जाता है।

ठीक वैसे ही विभिन्न सम्प्रदायों के लिए उपर वर्णित स्थल; चाहे जो भी उनके तीर्थ है; वहाँ जरूर उन्हें तत्जन्य फल प्राप्त होता होगा। तभी तो गौतम बुद्ध को गया में, तुलसी को प्रयाग में कबीर को काशी में, वामाखेप्पा को तारापीठ में और भक्त सूर–किशोर को जनकपुर में क्रमशः अपने–अपने साधना की सिद्धि मिली थी। उपरोक्त तथ्यों से अभिप्राय यह है कि मिथिला में भी ऊपर वर्णित जितने भी तरह के सम्प्रदाय हैं उन सबों को जो सिद्धियाँ मिली हैं वह संबंधित पीठों में ही प्राप्त है। उदाहरण स्वरूप हम यहाँ कालीदास का नाम लेते हैं; जिन्हें सारी विद्वता उच्चैठ देवी के सिद्ध पीठ में प्राप्त हुआ। वहीं मैथिल–कोकिल कवि विद्यापति को उगना स्थान में सिद्धि प्राप्त हुई; मदन

उपाध्याय को सारी सिद्धियाँ मंगरौनी स्थान पर प्राप्त हुई थी। श्री मदन के गुरू महामहोपाध्याय गोविन्द ठाकुर को सिद्धियाँ कहाँ प्राप्त हुई इसका पता नहीं है किन्तु बौद्ध लामा मकरध्वज जोगी को सिद्धियाँ अंधराठाढ़ी स्थान में प्राप्त हुई थी। अनगणित डायनों और तांत्रिकों को मनचाही सिद्धियाँ कोइलख देवी के यहाँ प्राप्त हुई तो कुछ को डोकहर पीठ से प्राप्त हुई।

इस तरह मिथिला के ऊपर वर्णित विभिन्न पीठों की ये विशेषता रही है कि वे अपने–अपने साधकों को मनचाही सिद्धियाँ देती रही हैं। आज भी नेपाल से जुड़े मिथिला वाले क्षेत्र में सखड़ा देवी [4] और गुहृयेश्वरी देवी के पास साधनाएँ सफलता की चरण चूमती हैं। अंतर सिर्फ इतना है कि जहाँ कुछ तीर्थ में साल के बारहों महीने साधकों की भीड़ लगी रहती है वहीं दूसरे तीर्थ कुछ खास समय पर ही भक्तों का जमघट देखते हैं। अन्य तीर्थों के तरह, मिथिला में भी पंडे और पुजारी आने वाले साधकों को आवश्यकता अनुसार मदद किया करते हैं किन्तु कोई साधक या भक्त उक्त तीर्थो में सालोभर जमकर नहीं बैठा रहता है।

निष्कर्ष :

मिथिला में तंत्र और तात्रिक परम्परा का विकास की विशेषता यह थी कि, यहाँ धार्मिक सहिष्णुता समाज में घर कर रही थी। अतः लगभग सभी कर्नाटवंशीय शासकों ने धार्मिक सहिष्णुता की नीति अपनाई और बिना विभेद के अथवा बिना सैद्धान्तिक संघर्षो के या अतिरिक्त साम्प्रदायिक उपद्रव के नाथ सम्प्रदाय को भी अपने कार्य करने की छूट मिथिला में प्राप्त थी। चूँकि मिथिला में भक्तिगान और तीर्थयात्रा का सर्वाधिक महत्व रहा है, अतः दक्षिण भारतीय राजाओं के होते हुए भी मिथिला में यह काल धर्म मिलन का काल कहा जा सकता है। इतिहास गवाह है कि मिथिला में वैदिक धर्म की प्रतिष्ठा होने के बावजूद भी जैन, धर्म और बौद्ध धर्म के साथ–साथ प्रायः सभी लोक–धर्मो ने समान रूप से संरक्षण प्राप्त किया और अपने–अपने मतों का विकास किया।

संदर्भ–सूची :

1. सुनीत कुमार चटर्जी ''बंगाल की संस्कृति : एक अध्ययन'' से साभार (सम्पादकीय से)
2. प्रो0 सत्य नारायण ठाकुर के अप्रकाशित शोध प्रबंध भारत में शाक्त धर्म तंत्रा पीठ से।
3. कामख्या महाकाव्य एवं सभी पुराणों कलिका पुराण सहित से।
4. सावरा देवी नेपाल में।